स्वच्छता का पैगाम

स्वच्छता का पैगाम लिखा है।
हम सबके ही नाम लिखा है।।
इधर-उधर ना कचरा डाले,
बतलाना सरेआम लिखा है।
हर घर पहुँचे कूड़ा गाड़ी,
डाले कूड़ा तमाम लिखा है।
कहीं ना दिखे कूड़ा-कर्कट,
ऐसा हो इंतजाम लिखा है।
सदा जो रखे साफ-सफाई,
ऐसी हो आवाम लिखा है।
स्वच्छता आदत में लाओ,
लगे न कोई दाम लिखा है।
स्वच्छता ही तंदुरुस्ती लाए,
रोगों की रोकथाम लिखा है।
आलस छोड़ो करो सफाई,
होता आराम हराम लिखा है।
कहे 'भारती' सुनो ध्यान से,
सुंदर हो नगर ग्राम लिखा है।

भूपसिंह भारती,
बल्डोदिया भवन,
आदर्श नगर नारनौल
(हरियाणा)

रक्षाबंधन का त्योहार

भाई बहिन का प्यार
राखी धागों का त्योहार ।
सावन के इस महिने में
आता रक्षाबंधन का त्योहार ।
छोटी बहना भाई से कहती
भैया मेरी रक्षा करना ।
राखी की डोर के इन धागों की
याद हमेशा दिल मे रखना ।
बचपन की उन यादों को
मन से कभी भुला न देना ।
साथ में खेलना ऊधम करना
आपस में लड़ना झगड़ना ।
मां से शिकायत जाकर करना
याद वो दिन अब भी आते है ।
रक्षाबंधन के त्योहार में जब भी
बहिन भाई आपस में मिलते है ।
पापा संग बाजार है जाते
राखी रूमाल खरीद कर लाते ।
खाने को मीठा भी लाते ।
रक्षाबंधन के दिन जल्दी उठते ।
सुबह सुबह सभी नहाते ।
कपड़े पहन तैयार हो जाते ।
बहिन भाई की राखी बांधती
और साथ ही मिठाई खिलाती ।
भाई बहिन खुशियों से मिलकर
रक्षाबंधन का त्योहार मनाते हैं ।
बचपन की राखी की वो यादें
आज ताज़ा खुशियों से करते है
राखी की डोर आज यही है
रक्षाबंधन का त्योहार यही है ।
भाई बहन की खुशियों का
राखी धागों का त्योहार यही है ।

डा अनन्तराम चौबे

रक्षाबंधन

कच्चे धागों में बँधा,रिश्ता यह मजबूत ।
भावों में है दिव्यता,नेह ईश का दूत ।।
राखी में तो लाज है,जिसमें शामिल
फर्ज ।
नही मानना है बुरा,निश्चित ही है
हर्ज ।।
नेह भरा रिश्ता फले,बन जाता उपहार ।
राखी बँधती है जहाँ, वहाँ पले
उजियार ।।
खूब कलाई धन्य है,हर्षित भ्राता-
माथ ।
अक्षत करता वंदना,देता युग-युग
साथ ।।
बहना ने भेजी दुआ,भाई है परदेश ।
शुभ-मंगल के भाव ने,हर डाला सब
क्लेश ।।
कितना पावन लग रहा,सज्जित राखी
थाल ।
आशीषों से हो रहा,व्यापक आज
कमाल ।।
बचपन है अब तो जवाँ, गुंजित नेहिल
गीत ।
निश्छलता मुखरित हुई,हर पल में है
जीत ।।
उमड़ रहा दोनों तरफ,भावों का
आवेग ।
आज निष्कपट पर्व ने,दिया हर्ष का
नेग ।।
दूरी भौतिक है मगर,डाक निभाती
साथ ।
मीलों चलकर राखियाँ,बँध जाती हैं
हाथ ।।
भले है बहुत दूरियाँ, नहीं घटे पर प्यार ।
बचपन से ही दिव्य है,राखी का
त्योहार ।।
बढ़ता ही बढ़ता रहे,राखी का उल्लास ।
रक्षाबंधन की छटा,सौंप रही फिर
आस ।।

प्रो.शरद नारायण खरे प्राचार्य
शासकीय जगन्नाथ मुन्नालाल चौधरी महिला महाविद्याल

मंडला(मप्र)-481661

मायका अब अपना-सा नहीं लगता

मायका अब अपना-सा नहीं लगता,
फैल गई है वहाँ
परायापन की तीखी-सी गंध,
जहाँ कभी साँसों में घुला रहता था
अपनत्व का चंदन,
अब हवाओं में तैरता है
एक अनकहा-सा द्वंद्व।
वही आँगन है,
वही देहरी, वही चौखट,
वही दीवारें हैं–
मगर जाने क्यों
उनमें अब वो गर्माहट नहीं,
जो कभी मेरे बचपन को
अपनी बाँहों में समेट लिया करती थी।
रिश्तों में अब
वो नर्माहट नहीं प्रतीत होती,
बातों में मिठास है,
मगर आत्मीयता कहीं खोती जाती है।
जैसे नदी तो वही हो,
पर जल में अब
प्यास बुझाने की तासीर न रही हो।
परस्पर कोई साझापन
जाने कब मौन हो गया,
हँसी के पीछे छिपा हुआ
कितना कुछ गौण हो गया।
मुस्कुराते चेहरों का
आडंबर-भरा मुखौटा पहनकर
हर बार वहाँ जाना होता है,
और लौटते हुए
उदासी की दुशाला ओढ़कर
चुपचाप घर आना होता है।
माँ-बाबा तो आज भी
टकटकी लगाए द्वार पर
मेरी राह निहारते हैं,
उनकी आँखों के दीप
मेरे आने की आहट पर
आज भी जगमगाते हैं।
माँ की ममता अब भी
वैसी ही निर्मल है,
बाबा का स्नेह अब भी
बरगद की छाँव-सा शीतल है–
फिर भी न जाने क्यों
उनके बीच खड़ी
कुछ अनकही दूरियाँ
मन को भीतर तक छलती हैं।
कभी जिस चौखट पर
बिना दस्तक चली आती थी मैं,
आज उसी देहरी पर
अपने ही कदमों से
संकोच करने लगी हूँ।
कभी मायका
मेरे लिए पूरा आकाश था,
अब लगता है–
उस आकाश में भी
मेरे हिस्से का कोई कोना
धीरे-धीरे छोटा हो गया है।
अब मायके में
ज्यादा मन रमता नहीं,
रिश्ते भी जैसे
अनकहे बोझ से दबे रहते हैं।
शब्द अधरों तक आकर
फिर लौट जाते हैं,
और भावनाएँ
आँखों के कोरों में
ठहरकर रह जाती हैं।
शायद घर वही है,
बस लोग बदल गए हैं...
शायद लोग वही हैं,
बस रिश्तों के अर्थ बदल गए हैं।
या फिर–
बदल गई हूँ मैं ही,
समय की धूप में चलते-चलते,
और मेरा बचपन
कहीं उसी आँगन में
पीछे छूट गया है।
मायका अब अपना-सा नहीं लगता...
फिर भी जब माँ पुकारती है,
तो मन आज भी
उसी ननही बच्ची-सा हो जाता है।
क्योंकि सच तो यही है–
मायका चाहे कितना भी पराया लगे,
माँ की आवाज़ में बसा अपनापन
कभी पराया नहीं होता।
और शायद इसी लिए
मायका छोड़कर लौटते हुए
सबसे ज्यादा
घर नहीं–
अपना बचपन छूटता है।

सारिका साहू सांची

मेरी रूबाइयां

आज विश्व मानवतावादी दिवस मनाएं।
आपदाओं में फंसे लोगों को हम
बचाएं।।
मानवीय सेवा से प्रसन्न होता, परमात्मा।
परोपकारी बनकर अपना फर्ज निभाएं।।
आगजनी, भूकंप,सुनामी महामारियों में।
समर्पित हों युद्धों,बाढ़पीड़ितों की सेवा में।।
भू-स्खलन तथा दुर्घटनाओं में मददगार हों।
सदा निस्वार्थ राहत देने की मंशा हो मन में।।
आज ही प्रण ले लो मानवता की करें सेवा।
मानवीय मूल्यों को दें सर्वोच्च प्राथमिकता।।
पर पीड़ा मुक्ति से तन-मन में,खुशी मयस्सर।
दुआएं और आशीर्वाद से मिले,अनूठी कृपा।।
अगर हम इंसान हैं तो इंसानियत को तरजीह।
जागरुकता फैलाएं,खिदमतगार बनो निरीह।।
घायलों और बीमारों को प्राथमिक उपचार दो।
मजलूमों,यतीमों और गरीबों की करिए मदद ।।

रामसेवक गुप्ता
मकराना राजस्थान

राखी: स्नेह की पावन डोर

राखी का ये पर्व है, प्रेम भरा त्योहार।
भाई-बहन के स्नेह से, महके सारा संसार॥
जिनके भाई हैं नहीं, बहनें हों न उदास।
दिल से अपना मानकर, दूँगा भाई का प्यार॥
दुनिया की हर बेटियाँ, बहना मेरी जान।
स्नेह-सम्मान से जोड़कर, रखूँ उनका मान॥
भाई का रिश्ता खून का, केवल होता नाय।
जहाँ मिले सच्चा स्नेह, रिश्ता वहीं बन जाय॥
भाई बिना बहनों को, कभी न हो मलाल।
मैं हूँ सबका अपना भाई, रखूँ सदा ख्याल॥
राखी केवल धागा नहीं, प्रेम-स्नेह की डोर।
दिल से जो बँध जाए कभी, टूटे न वह छोर॥
बहना तुम मुस्कान हो, भाई तुम्हारी आस।
रक्षा का ये पावन वचन, रहे सदा
विश्वास॥

रूपेश कुमार चैनपुर, सीवान, बिहार

रक्षा बंधन - पवित्रता, प्रेम और भाईचारे का प्रतीक

रक्षा बंधन पर्व महकता, गुनगुनाता
हर भाई-बहन का सुदृढ़ करता नाता
वो इस पावन नाते की स्नेहभरी उमंगें
ताउम्र कायम रहती ये सुन्दर तरंगें
परंपरा से जुड़े रहना है बहुत जरूरी
यह पर्व लाता खुशी, मिटाता दिलों की दूरी
सबसे सुन्दर रिश्ता परमपिता शिव परमात्मा से
उसी पर आधारित भाई-2 का नाता हर आत्मा से
आत्मा को पवित्रता की डोर बांधते शिव भोलानाथ
हर पल, हर घड़ी देते स्नेह व सुखों भरा साथ
पवित्रता के सूत्र में बंधकर, तोड़ें मजहबी दीवारें
सुख-शांति-संपत्ति का वर्सा देकर जीवन संवारें
आत्म स्मृति का तिलक लाता आत्मिक दृष्टि
भाई-2 के सम्बन्ध से श्रेष्ठ बनती दृष्टि, वृत्ति, कृति
मन-वचन-कर्म की पवित्रता लाती स्नेह व मधुरता
इसी से आ जाते सुख, शांति, संपत्ति व सन्तुष्टता
दिव्य बोलों की मधुरता से जीवन बन जाता मधुरतम
शिव को सम्पूर्ण पवित्रता का वचन दे बनें सर्वोत्तम
दैवी गुणों की खुशबु से महकाएं जीवन जैसे चन्दन
भारत को स्वर्ग बनाने लिए शिव संग मनायें रक्षा बंधन

बीके योगेश कुमार (9643066249), दिल्ली

तुम ही बताओ हम करें भी तो क्या

तेरी याद में मैं आँसू बहाता कैसे,
तुझे पलकों से भला मैं गिराता कैसे।
सामने सबके तुझे अपना बताता कैसे,

सबकी नजरों में तुझे मैं गिराता कैसे।
मैं तेरी महफिल में यूँ नहीं आया,
सोचकर यह बात मेरा दिल थर्राया।
सब की नजरों से तो छुपा सकता हूँ,

पर तेरी नजरों से ये राज छुपाता कैसे।
मुस्कुराता ही रहा सामने मैं सदा उसके,
जख्मू सीने के भला उसको दिखाता कैसे।
बसी है तू ही तो मेरी इन दोनों आँखों में,
रो के अश्रू में भला तुझको बहाता कैसे।
नामावर रोज मेरा खत मुझे लौटा देता है,

सामने सबके वो तेरे हाथों में थमाता कैसे।
दिल तो दिल है रूठ गया तो फिर रूठ गया,
तुम्हीं बताओ कि मैं फिर इसको मनाता कैसे।
अदाएँ होती हैं सताने की तुम हसीनों की,
बात इस दिल को ये लेकिन समझाता कैसे।
उम्र गुजारी है मैंने सारी तेरी मोहब्बत में,
दिल में फिर किसी और को बसाता कैसे।

डा. सारिका मुकेश(तमिलनाडु)

'क्षितिज के उस पार...'

आकाश नहीं होगा
धरती नहीं होगी
पैर थम जाए जमीं पर
ऐसी हाथों में छड़ी नहीं होगा
ऐसी कदम तले पगडंडी नहीं होगी ।
भोगना है यही राजनीति हमें
हाय अल्लाह !
खुदा खैर करे !!
कहते हैं इंसानों को
चुनावों की पहचान नहीं
जिस दिन अपना हक़
छिनना जान जाओगे
उस दिन तुम्हारे शहरों में
गंदगी नहीं होगी ।
हाथों में छड़ी नहीं होगा
कदम तले पगडंडी नहीं होगी
आकाश नहीं होगा
धरती नहीं होगी ।
झोला उठाकर
झोलाछाप दलाली छोड़ दे
तुम्हें पता होना चाहिए
क्षितिज के उस पार...
आकाश नहीं होता ।
घृणित के उस पार
जनता की जिंदगी नहीं होगी
आकाश नहीं होगा
धरती नहीं होगी ।।

मनोज शाह 'मानस'
नई दिल्ली

कविता - त्यौहार

हर त्यौहार हमें बहुत कुछ सिखाते है,
प्रेम और विश्वास को मन से अपनाते है
होली पर सब प्रेम के रंगों में रंग जाते है,
प्रेम से यह रंग,बिरंगा त्यौहार मनाते है
रक्षाबंधन भाई,बहन के प्रेम को दर्शाता है,
प्रेम से रिश्तों की डोर को मजबूत बनाता है
जन्माष्टमी में कान्हा का जन्मदिन मनाते है,
उनकी कृपा से मनचाहा वर पाते है
गणेश चतुर्थी बुद्धि और धैर्य हमें सिखाती है,
गणेशजी सभी के कष्ट को हरते है
नवरात्रि में मां के नौ रूपों की पूजा होती है,
नारी में शक्ति और ऊर्जा का संचार करती है
दशहरा बुराईयों को नष्ट करता है,
सत्य की सदा विजय होती यह दर्शाता है
दीपावली अधंकार मिटाकर प्रकाश करती है,
सबको सत्य की राह पर चलना सिखाती है
हर त्यौहार में कुछ न कुछ संदेश है,
तभी तो हमारा भारत दुनियां
में एक है

डॉ पूनम गुप्ता भोपाल

आवो रे मेघा तुम

आवो रे मेघा तुम, आवो रे मेघा तुम।
प्यासी है धरती, बरसावो पानी तुम।।
आवो रे मेघा तुम----------।।
बरसाके जल तुम, भर दो ताल-तलैया।
तरसे हैं तुमको मेघा, फूलों की बगिया।।
महका दो इन कलियों को।
हर्षा दो तुम अँखियों को।।
आवो रे मेघा तुम----------।।
सुख गई हैं फसलें, खेतों में तुम बिन।
टूट गए हैं सब दिल, लोगों के तुम बिन।।
तुम बेवफ़ाई यूँ मत करो।
जल से नदियां- सागर भरो।।
आवो रे मेघा तुम----------।।
सूना पड़ा है संगीत, उदास हैं मोर- पपैया।
मरने लगें हैं पशु- पक्षी, तुम हो खिवैया।।
ऐसे ना हमपे सितम करो।
ओ मेघा हमपे रहम करो।।
आवो रे मेघा तुम----------।।

गुरुदीन वर्मा उर्फ़ जी.आज़ाद
तहसील एवं जिला- बारां(राजस्थान)

रक्षाबंधन विशेष

यमराज मित्र की कुण्डलिया
बंधन सबसे है बड़ा, सबको लगता खास।
रिश्ता भाई-बहन का, पावन और उजास।।
पावन और उजास, जगत को प्यारा लगता।
होता द्वय को गर्व, भले जाता है ठगता।।
कहें मित्र यमराज, जाय हो कितनी अनबन।
पर सबसे मजबूत, बहन भाई का बंधन।।
भैया सुनिए बहन की, कहे मान अधिकार।
आप व्यर्थ करना नहीं, हमसे अब तकरार।।
हमसे अब तकरार, शपथ बंधन का देती।
राखी की दरकार, नहीं चाहूँ मैं खेती।।
कहें मित्र यमराज, बनाए रखना छँया।
बहना देखें राह, आप आ जाओ भैया।।
भाई का संदेश है, बहना सुन तू आज।
राखी का त्योहार है, तुझ पर मुझको नाज।।
तुझ पर मुझको नाज, दौड़ कर अब तू आ
जा।
रक्षाबंधन बाँध, आज फिर भैया राजा।।
कहें मित्र यमराज, बहन जब तू मुस्काई।
गर्वित होता नित्य, मान देता तव भाई।।
बंधन जन्मों साथ का, ईश्वर का उपहार।
दूजा माता रूप में, बहनें हैं संसार।
बहनें हैं संसार, साथ है बचपन बीता।
लाड़-प्यार तकरार, नेह संबंध न रीता।।
कहें मित्र यमराज, करें हम सब ही वंदन।
ईश्वर का उपहार, बहन भाई का बंधन।।
पावन राखी पर्व है, बहनों का अधिकार।
भ्रात कलाई साजकर, दे रक्षा का भार।।
दे रक्षा का भार, नहीं धागा है कच्चा।
इसमें बंधा हुआ, नेह सदा का सच्चा।।
कहें मित्र यमराज, भाव होता मनभावन।
भाई-बहना प्यार, सूत्र है सबसे पावन।।
रक्षाबंधन पर्व पर, छाया चहुँदिश हर्ष।
भ्रात-बहन का देखिए, आल्हादित उत्कर्ष।।
खुशियों का उत्कर्ष, भरोसा कभी न टूटे।
भैया बहिनी साथ, नहीं जीवन भर छूटे।।
कहें मित्र यमराज, करूँ मैं प्रभु से वंदन।
युगों-युगों तक रहे, अमर यह रक्षाबंधन।।

सुधीर श्रीवास्तव

तुमको मेरी याद आ रही होगी

ये हिचकियों हिचकोले लेकर
मुझको बता रही है
तुम करवटें वहां बदल रही
सलवटे यहां चादर पर आ रही हे

तुमको मेरी याद आ रही होगी
तस्वीर दिल से लगाई जा रही है
मंदमंद
मुस्कान होठों पर आ रही हे

तुमको मेरी याद आ रही होगी
ये हिचकियों हिचकोले लेकर सब बता रही
है
चांदनी रात ये गवाही दे रही
देख देख चांद को राह ता की जा रही होगी
तुमको मेरी याद आ रही होगी

वैभव जैन

क्षणिका

जब तक
राजनीति बहन
बांधती रहेगी राखी
भ्रष्टाचार भाई की
कलाई में।
तब तक
देश की जनता
जलती रहेगी
महंगाई में।।

कृष्ण कुमार अजनबी

अगर ऐसा होता तो

जरूरी नहीं है कि
एक धनाढ्य की बेटी
एक धनाढ्य ससुराल पाकर
खुशियाँ ही खुशियाँ बाँधेगी अपने
आँचल में;
और अगर ऐसा होता तो,
अवधेश की वैदेही को भला
क्यों मिलता वनवास ही वनवास।
जरूरी नहीं है कि
अनंत प्रीत हो जब ईश्वर से
और भक्ति का ऐश्वर्य ही
मिलता रहे आजीवन;
और अगर ऐसा होता तो,
राणा का भेजा हुआ जहर
मीरा को नहीं पीना पड़ता।
जरूरी नहीं है कि
एक प्रतापी सम्राट पिता महाराणा
वीरांगना अजदबे की नन्ही तनया
वंचित हों अपने हिस्से के कष्टों से,
और अगर ऐसा होता तो,
उन्हें वन-वन भटकते हुए
नहीं खानी पड़ती घास की रोटियाँ।

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'

क्या कहें किससे कहें

बोझ से रिश्ते हैं, दिल पे भार है।
चैन से जीना, बहुत दुश्वार है।।
घर के अंदर, साँप-सीढ़ी का है
खेल,
इक चढ़ाता, दूसरा देता धकेल।।
सीढ़ियों साँपों में भी गठजोड़ है।
राह में दो-चार पग पर मोड़ है।।
दिन में अमृत, रात वो लगता गरल।
हर पहेली नित्य, हो जाती सरल।।
ग्रंथियों का विष, उजागर हो रहा।
कष्ट जो नाला था, सागर हो रहा।।
छिद्र छल के, सामने आने लगे।
गाते-गाते स्वप्न, चिल्लाने लगे।।
दोगलापन सोच पर, हावी हुआ।
आज जैसा कष्टप्रद, भावी हुआ।।
धूप अमराई में, आने लग गई।
अपनी परछाई, डराने लग गई।।
मंथरा के मुख, कुटिल मुस्कान है।
फिर से होने को, अवध वीरान है।।
मूल्य नैतिकता, न कोई लाज है।
जितना विकृत, कल नहीं था आज
है।।
रक्त-रंजित, आस्था की देह है।
छटपटाता, दम्भ नीचे नेह है।।
काहे का घर, एक कारागार है।
छत के नीचे, मौन हर दीवार है।।
हर कोई, विषबेल सी है बो रहा।
क्या कहें, किससे कहें, क्या हो
रहा??

प्रणय प्रभातश्योपुर
(मध्यप्रदेश)

नियति

कृषक के खेत से
करके शस्य हरण
कर लिया मूषक ने
धनिक वेश धारण।
2फिर एक कृष्ण विषधर
झपटा उस पर
डाल लिया मुंह में
धनिक मूषक लपककर।
3विषधर चला कुछ कदम
इतराता इठलाता हुआ
मूषक को मुंह में शनैः शनैः
चबाता हुआ।
4फिर एक गिद्ध ने
देखा विषधर
ले उड़ा उसे ऊपर
काल बनकर।
5तभी व्याध के हाथ से
सरससराती गोली चली
गिद्ध गिर पड़ा नीचे
छटपटा कर निर्बली।
6कृषक ने देखा यह दृश्य
मन भर कर
काल ग्रस्त रहा था सबको
इस तरह नियति बनकर।

अशोक दर्द 01-11-2003

रेशम की डोरी नहीं, यह विश्वास का संसार है,
बहन के स्नेह में भाई का अटल संस्कार है।
कलाई पर बँधता सूत्र, हृदय में दीप जलाता है,
दूर खड़ा भाई भी बहना के पास चला आता है।
न इसमें केवल नेह है, न केवल मधुर दुलार,
इसमें जीवन भर का है, अपनापन और अधिकार।
बहन की आँखों में सपनों का उजियारा रहता है,
भाई के हर संकल्प में उसका सहारा रहता है।
सुख में जो मुस्कान बने, दुःख में जो ढाल बने,
रिश्तों की तपती राहों में शीतल मलय पवन बने।
यह सूत्र कहता है–मत रिश्तों को व्यापार बनाना,
स्वार्थों की आँधी में मत स्नेह-दीप बुझाना।
जिस घर में सम्मान रहे, वह घर तीर्थ समान,
जहाँ बहन सुरक्षित हो, धन्य वही परिवार महान।
रक्षा केवल हाथों की शक्ति से पूरी नहीं होती,
सच्ची रक्षा तो मन में करुणा होने से होती।
आओ इस पावन सूत्र से इतना प्रण आज करें,
हर बहन के सम्मान की मिलकर रक्षा करें।

अवनीश कुमार गुप्ता 'निर्द्वंद्व'आजमगढ़ उत्तर प्रदेश

मुक्तक

शब्द से गायन, वाद्य से वादन,अंगों से नृत्य
थिरकता है,
स्वर-ताल और लय वृद्ध हो जो, वो ही संगीत
महकता है,
संगीत है ऐसी योग क्रिया,तन मन शुद्धि कर रोग हरे,
सात स्वरों की लहरी मिल, जीवन में लाती सरसता है।
वो गीत समर्थ न होता जो, उद्गार हृदय में भर न सके,
संगीत अधूरा जिसके बल से, पत्थर दिल यदि न झूम सके,
आवाज भी जिसकी मधुर न हो, क्या गीत वो गाकर बतलाए,
संगीत दवा है एक ऐसी,मिल जाए तो मन को बहला सके।

चन्द्र कुमार जैन
द्वारका नई दिल्ली

मन का आईना

मन क्या है? बस दो अक्षर का छोटा सा नाम,
पर ये तन का सूक्ष्म साक्षी, ये जीवन का पैग़ाम।
मन के बिना हम अधूरे, मन के बिना हम शून्य,
दिमाग राह दिखाता है, मन दिखाता है सौंदर्य।
कैसे देखते भला प्रकृति की छटा निराली?
कैसे सुनते पत्तों का मधुर, मधुर संगीत वो मतवाली?
झरनों का कलकल गीत, कानों से होकर गुजरता है,
पर मिठास पाता वही, जब मन से होकर गुजरता है।
आँखों के आगे संसार, पर मन ही बताता है,
जड़-चेतन हर कण से, मन ही रिश्ता जोड़ जाता है।
उसी रिश्ते में छुपा है, आनंद का खज़ाना सारा,
मन ही तो है खुशी का स्रोत, मन ही आनंद का धारा।
जैसे तन को स्वस्थ रखना, हर पल जरूरी होता है,
वैसे ही मन को निर्मल रखना, जीवन का मंत्र होता है।
मन का स्वास्थ्य टिका है, विचारों की क्यारी पर,
जो बोओगे वही उगेगा, इस दिल की ज़मीं पर।
क्या पढ़ा, क्या सुना, क्या संग रखा हमने?
कौन सा विचार सहेजा, किसे कचरे में धकेल दिया हमने?
कृष्ण रखोगे साथ तो गीता बजेगी रग-रग में,
शकुनी रखोगे पास तो छल ही छल होगा जग में।
इसलिए दीपा कहती है, मन को स्वस्थ रखो यारो,
प्रसन्न रखो इसे सदा, खुशियों से इसे सिंगारो।
मन ही मंदिर, मन ही तीर्थ, मन ही ईश्वर का धाम,
मन सँवर गया तो समझो, सँवर गया सारा जहान।

दीपा शर्मा उजाला
फरीदाबाद

अपणायत

अपणायत औषधी है मन रे घाव री,
जीव भलो वो हिज समझे जको सार भाव री।
हाथ में तो नी बेमाता री लेखणी,
पण रेवे आ-तो की भली नी दुर्दशा कोई री देखणी।

आज वो है, काल ओ है, तो म्हें हूँ अठे परसों,
कर्म आवे आडो, बीते भलीं बरसों।
मानी की सोराई में दोराई तो भूलीजे,
पण अबखी में सागे खड़े ने किकर बिसराईजे।

मोद में डूबिया बड़ाई होए धराशाई,
हेत अर मिठास कंया री नौका पार लगाई।
सीधो जीव रखे, फूँक-फूँक पग, मिळ न जा कूजस,
उणहूँ घटियोड़ो कुण रे, करे कूजस रो-ई अजंस।
मन परखीजे जद कोई री

लाचारगी मारे चारूँ मेर हेला,
दया करे छाती पेल समझण री,
पछे जगत री सोचेला।
अब हुवे भान खुद री करणी रो, तो ही भलो जाण,
इ झंजाळ में तो भटकिया रेजा लोग जावे भली प्राण।
जीतियोड़े री जसगाथा गावणी,

हर हारियोड़े री उड़ावणी,
थूं तो समझी रे किती लाजिम है,
इण रीति ने मिटावणी।
आ बेळा है जो हर-एक ने गम खड़ावे,
वोई वक्त इज है जो गियोड़ी दिराव़े।

भली लागे देखणी, अर खारी लागे सहणी,
काळ री बळता पिहचाण, हर रात नी ऐड़ी रेवणी।

केवे माँ, डील रिझावणो, दो घड़ी रो सरावणो,
साच्ची लागे म्हन तो हियो चंगो, जग सुहावणो।
संसार री तो है निराळी रीत,
अठे अमर है तो वा है प्रीत ॥

दिनेश सिंह चारण (सिंहस्थल)

बड़े माहिर हो तुम

प्रीत जगाकर तोड़ने में तो बड़े माहिर हो तुम ।
जमाना ताने मानकर गुनाहगार मान रहा हमको ।।

prafulla trivedi